| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

हिंदी साहित्य उत्कर्ष में महादेवी वर्मा का योगदान

Govind Singh Meena

Associate Professor in Hindi Department, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

उन्होंने काव्य के साथ कहानियाँ, रेखाचित्र, निबंध लिखे हैं । उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी पहचाना जाता है । महादेवी का हिंदी साहित्य को बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी ने समाज जीवन के साथ भारत वर्ष की ग्रामीण जनता के दुख दर्द का चित्रण किया है ।

परिचय

विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना, इतिहास यही-

उमड़ी कल थी, मिट आज चली।

भारतीय साहित्य जगत को अपनी लेखनी से समृद्ध करने वाली लेखिका महादेवी वर्मा (Mahadevi Verma) हिंदी साहित्य के छायावाद काल के प्रमुख 4 स्तम्भों में से एक के रूप में अमर हैं। हिंदी साहित्य में उनकी एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में पहचान है और छायावादी काव्य के विकास में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। साहित्य और संगीत का अद्‌भुत संयोजन करके गीत विधा को विकास की चरम सीमा पर पहुंचा देने का श्रेय महादेवी को ही है।

कवि निराला, ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती' की उपमा से भी सम्मानित किया है। वह हिंदी साहित्य में वेदना की कवयित्री के नाम से जानी जाती हैं एवं आधुनिक हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तक भी मानी जाती हैं।

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में गोविंद प्रसाद वर्मा और हेम रानी देवी के घर हुआ था। जबकि उनके पिता, भागलपुर के एक कॉलेज में एक अंग्रेजी प्रोफेसर, ने उन्हें पश्चिमी शिक्षाओं और अंग्रेजी साहित्य से परिचित कराया, उनकी माँ ने उनके भीतर हिंदी और संस्कृत साहित्य में एक स्वाभाविक रुचि का आह्वान किया।

एक साहित्य से भरपूर, वातावरण में पली बढ़ी युवा महादेवी वर्मा ने बहुत ही कम उम्र में काव्य लेखन की ओर स्वाभाविक रूप से एक जुनून विकसित किया। हालाँकि महादेवी ने अपनी पहली कविता 7 साल की उम्र में लिखी थी, लेकिन वह अपनी कविता और अन्य लेखन को छिपा कर रखती थीं। जब उनकी सहेली और सुप्रसिद्ध कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान (Subhadra Kumari Chauhan) को उनके लेखन का पता चला, तब महादेवी की प्रतिभा सामने आई।

जैसा कि उस समय का चलन था, 9 साल की उम्र में महादेवी की शादी एक डॉक्टर स्वरूप नारायण वर्मा से कर दी गई थी, जिसकी स्मृति कुछ इन शब्दों में वह दर्ज़ करती हैं:

'बारात आई तो बाहर भागकर हम सबके बीच खड़े होकर बारात देखने लगे। व्रत रखने को कहा गया तो मिठाई कमरे में बैठकर खूब मिठाई खाई। रात को सोते समय नाउन ने गोद में लेकर फेरे दिलवाए होंगे, हमें कुछ ध्यान नहीं है। प्रातः आंख खुली तो कपड़े में गांठ लगी देखी तो उसे खोलकर भाग गए।

अब इसे महादेवी का विद्रोही मन कहा जाए या अति-संवेदनशील हृदय, महादेवी पिंजड़े की नहीं रेगिस्तान की चिड़िया थीं और सांसारिक जीवन से विरक्ति के कारण उन्होंने शादी के बंधन में बंधना मंज़ूर नहीं किया।[1,2,3]

महादेवी, उन प्रथम भारतीय कवित्रियों में से एक हैं जिन्होंने अपने साहित्य में नारी सशक्तिकरण के प्रासंगिक मुद्दे को न केवल स्पर्श किया, बल्कि विस्तार से संबोधित करने का साहस किया।

फ्रांसीसी लेखिका सिमोन डी बेवॉयर (Simone de Beauvoir) के अपनी प्रभावशाली पुस्तक, द सेकेंड सेक्स (1949) (The Second Sex (French: Le Deuxième Sexe) जारी करने से कई साल पहले, भारत में महादेवी वर्मा ने 1930 के दशक में चांद जैसी पत्रिकाओं के लिए महिलाओं के उत्पीड़न पर शक्तिशाली निबंधों की एक श्रृंखला लिखी थी। ये निबंध 1942 में प्रकाशित उनकी पुस्तक श्रृंखला की कड़ियाँ में एकत्र किये गए हैं।

महादेवी जी का गद्य और पद्य दोनों पर ही समानाधिकार था । नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा उनके प्रसिद्ध गीत सग्रह हैं । अतीत की स्मृतियां, शृंखला की कड़ियां, पथ के साथी आदि उनके रेखाचित्र संस्मरण निबन्ध से सम्बन्धित संग्रह हैं । वहीं महादेवीजी ने श्रेष्ठ कहानियां भी लिखीं । पशु-पक्षी जगत् पर उनकी मार्मिक कहानियां अत्यन्त जीवन्त हैं।

कितनी करूणा कितने संदेश

पथ में बिछ जाते बन पराग

गाता प्राणों का तार तार

अनुराग भरा उन्माद राग

आँसू लेते वे पथ पखार

जो तुम आ जाते एक बार।

वेदना के स्वरों की अमर गायिका महादेवी वर्मा ने हिंदी-साहित्य की जो अनवरत सेवा की है उसका समर्थन दूसरे लेखक भी करते हैं। कवितामय हृदय लेकर और कल्पना के सप्तरंगी आकाश में बैठकर जिस काव्य का उन्होंने सृजन किया, वह हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

जीवन के अंतिम समय तक साहित्य-साधना में लीन रहते हुए 80 वर्ष की अवस्था में 11 सितंबर, 1987 को प्रयाग में वेदना की महान कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपनी आंखें सदा-सदा के लिए बंद कर ली।

विचार-विमर्श

वे मुस्काते फूल नहीं…जिनको आता है मुर्झाना, वे तारों के दीप नहीं….जिनको भाता है बुझ जाना। इन पंक्तियों को जीवंत करती कवियित्री महादेवी उस फूल के ही समान हैं, जो कभी मुरझाई नहीं। हिन्दी साहित्य के महान कवि-कवयित्री में महादेवी जी का नाम अग्रणी हैं। छायावादी कविता की सफ़लता में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है और वे छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभों में से एक हैं। आधुनिक युग की मीरा के उपनाम से सम्मानित महादेवी, निरंतर महिलाओं के हित में आवाज उठाती रहीं।

महादेवी वर्मा (Mahadevi Verma ka Jivan Parichay) एक भारतीय हिन्दी भाषा की कवयित्री, निबंधकार, रेखाचित्र कथाकार और हिन्दी साहित्य की प्रख्यात हस्ती हैं। उन्हें हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। वह उन कवियों में से एक थीं जिन्होंने भारत के व्यापक समाज के लिए काम किया। कवि निराला ने एक बार उन्हें "हिंदी साहित्य के विशाल मंदिर की सरस्वती" भी कहा था। न केवल उनकी कविता बल्कि उनके सामाजिक उत्थान कार्य और महिलाओं के बीच कल्याणकारी विकास को भी उनके लेखन में गहराई से चित्रित किया गया था।

महादेवी (Mahadevi Verma ka Jivan Parichay) का जन्म 26 मार्च 1907 को प्रातः 8 बजे फ़र्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः दादा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और उन्हें घर की देवी मानते हुए उनका नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। ऐसा माना जाता है कि अपनी मां के द्वारा ही महादेवी वर्मा में संगीत के प्रति रूचि

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

जागी। अपने बचपन की जीवनी "मेरे बचपन के दिन" वर्मा ने लिखा है कि वह एक उदार परिवार में पैदा होने के लिए बहुत भाग्यशाली थीं, ऐसे समय में जब एक लड़की को परिवार पर बोझ माना जाता था।

उनके दादा की कथित तौर पर उन्हें एक विद्वान बनाने की महत्वाकांक्षा थी, लेकिन 9 साल की उम्र में ही उनकी शादी स्वरूप नारायण वर्मा से कर दी जाती है। नारायण जी उस समय 10वीं के छात्र थे। महादेवी का विवाह जब हुआ था तब वे विवाह का मतलब भी नहीं समझती थीं। उनको ये भी पता नहीं था कि उनका विवाह हो रहा है। मानस बंधुओं में सुमित्रानन्दन पन्त एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन पर्यन्त राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

शिक्षा और करियर

महादेवी वर्मा को मूल रूप से एक कॉन्वेंट स्कूल में भर्ती कराया गया था, लेकिन विरोध और अनिच्छुक रवैये के कारण, उन्होंने इलाहाबाद के क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में प्रवेश लिया। वर्मा के अनुसार, उन्होंने क्रॉस्थवेट के छात्रावास में रहकर एकता की ताकत सीखी। यहां विभिन्न धर्मों के छात्र एक साथ रहते थे। वहां वे गुप्त रूप से कविता लिखने लगीं, लेकिन उनकी रूममेट और सीनियर सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा उनकी छिपी हुई कविताओं की खोज के बाद, उनकी छिपी साहित्यिक प्रतिभा का खुलासा हुआ।[4,5,6]

जबकि दूसरे लोग बाहर खेलते थे, मैं और सुभद्रा एक पेड़ पर बैठते थे और हमारे रचनात्मक विचारों को एक साथ बहने देते थे ... वह खारीबोली में लिखती थी , और जल्द ही मैंने भी खारीबोली में लिखना शुरू कर दिया ... इस तरह, हम इस्तेमाल करते थे दिन में एक या दो कविताएँ लिखने के लिए...

~ महादेवी वर्मा, स्मृति चित्र

वह और सुभद्रा साप्ताहिक पत्रिकाओं जैसे प्रकाशनों में भी कविताएँ भेजते थे और उनकी कुछ कविताएँ प्रकाशित होने में सफल रहीं। दोनों नवोदित कवियों ने कविता संगोष्ठियों में भी भाग लिया, जहाँ वे प्रख्यात हिंदी कवियों से मिले और दर्शकों को अपनी कविताएँ सुनाई। यह साझेदारी तब तक जारी रही जब तक सुभ्रादा ने क्रॉस्थवेट से ग्रेजुएशन नहीं किया। 1929 में उन्होंने ग्रेजुएशन पूरा किया।

1930 में, निहार, 1932 में, रश्मि, 1933 में, नीरजा की रचना उनके द्वारा की गई थी। 1935 में, संध्यागीत नामक उनकी कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ था। 1939 में, यम शीर्षक के तहत उनकी कलाकृतियों के साथ चार काव्य संग्रह प्रकाशित किए गए थे। इनके अलावा, उन्होंने 18 उपन्यास और लघु कथाएँ लिखी थीं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की राहे, पथ के साथी श्रींखला के करिये (श्रृंखला की कड़ी) और अतित के चलचरितो प्रमुख हैं। उन्हें भारत में नारीवाद की अग्रदूत भी माना जाता है।

वर्मा का करियर हमेशा लेखन, संपादन और शिक्षण के इर्द-गिर्द घूमता रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार की जिम्मेदारी उस समय महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम माना जाता था। वे इसकी प्राचार्य भी रह चुकी हैं। 1923 में, उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका चांद को संभाला। 1955 में वर्मा ने इलाहाबाद में साहित्यिक संसद की स्थापना की और इलाचंद्र जोशी की मदद से इसके प्रकाशन का संपादन किया। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखी।

महादेवी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव में, उन्होंने एक सार्वजनिक सेवा की ओर रूख किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए झांसी में काम किया। 1937 में, महादेवी वर्मा ने नैनीताल से 25 किमी दूर उमागढ़, रामगढ़, उत्तराखंड नामक गाँव में एक घर बनाया। उन्होंने इसका नाम मीरा मंदिर रखा। उन्होंने गाँव के लोगों के लिए और उनकी शिक्षा के लिए काम करना शुरू कर दिया।

उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए बहुत काम किया। आज इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। प्रयासों की श्रृंखला में, वह महिलाओं की मुक्ति और विकास के लिए साहस और दृढ़ संकल्प को बढ़ाने में सक्षम थी। जिस तरह से उन्होंने सामाजिक रूढ़िवादिता की निंदा की है, उससे

उन्हें एक महिला मुक्तिवादी के रूप में जाना जाता है। महिलाओं के प्रति विकास कार्य और जनसेवा और उनकी शिक्षा के कारण उन्हें समाज सुधारक भी कहा जाता था और इसी तरह उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन साहित्य और समाजिक कार्यों में समर्पित कर दिया।

महादेवी वर्मा : छायावादी युग स्तंभ

साहित्य में महादेवी वर्मा का उदय किसी क्रांति से कम नहीं था। उन्होंने हिंदी कविता में ब्रजभाषा कोमलता का परिचय दिया, जो उस समय बहुत बड़ी बात थी। हमें भारतीय दर्शन को दिल से स्वीकार करने वाले गीतों का भंडार, महादेवी वर्मा द्वारा ही प्राप्त हुआ है। अपनी कृतियों के जरिए उन्होंने भाषा, साहित्य और दर्शन के तीन क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण कार्य किया जिसने बाद में एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया।

छायावादी कविता की सफ़लता में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। जयशंकर प्रसाद ने छायावादी कविता को प्रकृतिकरण दिया, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने उसमें मुक्ति को मूर्त रूप दिया और सुमित्रानंदन पंत ने नाजुकता की कला लाई, वहीं वर्मा ने छायावादी कविता को जीवन दिया। आज भी महादेवी छायावादी युग के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में विख्यात हैं।

आधुनिक मीरा 'महादेवी'

महादेवी ने संपूर्ण जीवन साहित्य की साधना की और आधुनिक काव्य जगत को अपने योगदान से आलोकित किया। उनके काव्य में उपस्थित विरह वेदना और भावनात्मक गहनता के चलते ही उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा गया।

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना, इतिहास यही-
उमड़ी कल थी, मिट आज चली!
~ महादेवी वर्मा

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री वेदना को चित्रित करने वाली महादेवी वर्मा की कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' की यह आखिरी पंक्तियां यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि, उन्हें आधुनिक युग की मीरा क्यों कहा जाता है। क्या आप जानते हैं कि महादेवी का जन्म संयोग से होली के दिन हुआ था। न जाने होलिका का असर था या महादेवी की नियती थी, वह जीवन भर वेदना की आंतरिक अग्नि में जलती रहीं। 'बीन भी हूं, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूं' कविता में वह अपनी मनोदशा का इजहार कुछ यूं करती हैं-

नींद थी मेरी अचल निस्पन्द कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पन्दन में,
प्रलय में मेरा पता पदचिन्ह जीवन में,
शाप हूं जो बन गया वरदान बंधन में
कूल भी हूं कूलहीन प्रवाहिनी भी हूं!
बीन भी हूं मैं…तुम्हारी रागिनी भी हूं।

महादेवी वर्मा का साहित्य जगत में योगदान

हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग के उपरांत कविताओं में जो धारा प्रवाहित हुई, उसे हम छायावादी कविताओं के नाम से जानते हैं और महादेवी छायावादी युग की एक महान कवियित्री थीं। उनकी कविता की सबसे प्रमुख विशेषता भावुकता और भावना की तीव्रता है। हृदय की सूक्ष्म से भी सूक्ष्म अभिव्यक्तियों की ऐसी जीवंत और मूर्त अभिव्यक्ति 'वर्मा' को छायावादी कवियों में सर्वश्रेष्ठ बनाती है। उन्हें हिंदी में उनके भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद किया जाता है। उनके भाषण आम आदमी के लिए करुणा और सच्चाई की दृढ़ता से भरे हुए थे। [7,8,9]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

मूल रचनाओं के अलावा, वह अपने अनुवाद ‘ सप्तपर्णा’ (1980) जैसी रचनाओं के साथ एक रचनात्मक अनुवादक भी थीं। अपनी सांस्कृतिक चेतना की सहायता से उन्होंने वेदों, रामायण, थेरगाथा और अश्वघोष, कालिदास, भवभूति और जयदेव की कृतियों की पहचान स्थापित कर अपनी कृतियों में हिंदी काव्य की 39 चुनी हुई महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रस्तुत की हैं।

‘अपना बात ‘ में, उन्होंने भारतीय ज्ञान और साहित्य की इस अमूल्य विरासत के संबंध में गहन शोध किया है, जो केवल सीमित महिला लेखन ही नहीं, बल्कि हिंदी की समग्र सोच और उत्तम लेखन को समृद्ध करती है। साहित्य जगत में उनका योगदान इस बात से ही स्पष्ट है कि है कि वे आज भी हिंदी साहित्य की एक महान कवयित्री के रूप में याद की जाती हैं।

महादेवी वर्मा की साहित्यिक रचनाएँ

महादेवी ने साहित्य जगत को कई मनमोहक कृतियां प्रदान की हैं। वर्मा एक कवि होने के साथ-साथ एक प्रतिष्ठित गद्य लेखक भी थीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-

काव्य संग्रह

महादेवी वर्मा ने कई काव्य संग्रहों की रचना की हैं, जिनमें नीचे दी गई रचनाओं से कई चयनित गीतों का संकलन किया गया है। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं –

- निहार (1930)
- रश्मि (1932)
- नीरजा (1933)
- संध्यागीत (1935)
- प्रथम अयम (1949)
- सप्तपर्णा (1959)
- दीपशिखा (1942)
- अग्नि रेखा (1988)

गद्य और रेखाचित्र

उनकी प्रमुख गद्य रचनाओं में शामिल हैं –

- अतीत के चलचित्र (1961, रेखाचित्र)
- स्मृति की रेखाएं (1943, रेखाचित्र)
- पाठ के साथी (1956)
- मेरा परिवार (1972)
- संस्कारन (1943)
- संभासन (1949)
- श्रींखला के करिये (1972)
- विवेचामनक गद्य (1972)
- स्कंधा (1956)
- हिमालय (1973)

अन्य

महादेवी वर्मा की बाल कविताओं के दो संकलन इस प्रकार हैं-

- ठाकुरजी भोले हैं
- आज खरीदेंगे हम ज्वाला

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

पुरस्कार और सम्मान

महादेवी वर्मा (Mahadevi Verma ka Jivan Parichay) मानव मन की भावनाओं को जिकर उन्हें शब्दों में पिरोती थीं। यह उनकी रचनाओं में देखने को मिलता था। उनकी उन जीवंत रचनाओं और समाजिक कार्यों के लिए उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओं से विभिन्न पुरस्कार व सम्मान मिले। उनमें से कुछ प्रमुख पुरस्कार और सम्मान इस प्रकार हैं –

- 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि दी।
- 1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।
- सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया।
- इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए।
- 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।
- 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर था।
- 16 सितंबर 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपये का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

महादेवी वर्मा बनीं महिला सशक्तिकरण की मिसाल

महादेवी (Mahadevi Verma ka Jivan Parichay) एक प्रभावशाली सक्रिय महिला कार्यकर्ता थीं। उन्होंने अपनी रचना 'श्रृंखला की कड़ियों' में भारतीय नारी की दयनीय दशा, उनके कारणों और उनके सहज नूतन सम्पन्न उपायों के लिए अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने उन विचारों पर स्वयं जी कर भी दिखाया है। महादेवी एक जानी-मानी चित्रकार भी थीं। उन्होंने अपनी कृति 'दीप शिखा' के लिए बहुत से वर्णन चित्रित किए।

महादेवी कहतीं हैं कि 'भारतीय शास्त्रों में महिलाएं पुरुष की संगिनी रही है, छाया मात्र नहीं'

उन्होंने नारी जगत को भारतीय संदर्भ में मुक्ति का संदेश दिया। नारी मुक्ति के विषय में उनका विचार है कि भारत की स्त्री तो भारत माँ की प्रतीक है। वह अपनी समस्त सन्तान को सुखी देखना चाहती है। उन्हें मुक्त करने में ही उनकी मुक्ति है। मैत्रेयी, गोपा, सीता और महाभारत के अनेक स्त्री पात्रों का उदाहरण देकर वह निष्कर्ष निकालती हैं कि उनमें से प्रत्येक पात्र पुरुष की संगिनी रही है, छाया मात्र नहीं। छाया और संगिनी का अंतर स्पष्ट है – 'छाया का कार्य, आधार में अपने आपको इस प्रकार मिला देना है जिसमें वह उसी के समान जान पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्ण कर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना।'

'हमारी श्रृंखला की कड़ियाँ' लेख उन्होंने साल 1931 में लिखा था। स्त्री और पुरुष के पति-पत्नी संबंध पर विचार करते हुए महादेवी जी ललकार भरे स्वर में सवाल उठाती हैं – अपने जीवनसाथी के हृदय के रहस्यमय कोने-कोने से परिचित सौभाग्यवती सहधर्मिणी कितनी हैं? जीवन की प्रत्येक दिशा में साथ देनेवाली कितनी हैं?

मौजूदा समय में भी इन सवालों के जवाब संतोष प्रदान करने लायक नहीं हो सकते। रामायण की सीता पतिव्रता रहने के बावजूद पति की परित्यक्ता बन गयी। नारी की नियति ऐसी क्यों? महादेवीजी इसे नारीत्व का अभिशाप मानती है। साल 1933 में उन्होंने नारीत्व के अभिशाप पर लिखा है – 'अग्नि में बैठकर अपने आपको पतिप्राणा प्रमाणित करने वाली स्फटिक सी स्वच्छ सीता में नारी की अनंत युगों की वेतना साकार हो गयी है।' सीता को पृथ्वी में समाहित करते हुए राम का हृदय विदीर्ण नहीं हुआ।

'भारतीय संस्कृति और नारी' शीर्षक निबंध में उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्त्री के महत्वपूर्ण स्थान पर गंभीर विवेचना की है। उनके अनुसार मातृशक्ति की रहस्यमयता के कारण ही प्राचीन संस्कृति में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, भारतीय संस्कृति में नारी की आत्मरूप को ही नहीं उसके दिवात्म रूप को प्रतिष्ठा दी है।

महादेवी आधुनिक नारी की स्थिति पर नज़र डालते हुए भारतीय नारी के लिए समाज में पुरुष के समकक्ष स्थान पाने की ज़रूरत पर जोर देती हैं। साल 1934 में लिखित 'आधुनिक नारी-उसकी स्थिति पर एक दृष्टि' लेख में वे कहती हैं – 'एक ओर परंपरागत संस्कार ने उसके हृदय में यह भाव भर दिया है कि पुरुष विचार, बुद्धि और शक्ति में उससे श्रेष्ठ है और दूसरी ओर उसके भीतर की नारी प्रवृत्ति भी उसे स्थिर नहीं करने देती।'

महादेवी जीवन भर अपनी लेखनी से सजगता और निडरता के साथ भारत की नारी के पक्ष में लड़ती रहीं। नारी शिक्षा की ज़रूरत पर जोर से आवाज़ बुलंद की और खुद इस क्षेत्र में कार्यरत रहीं। उन्होंने गांधीजी की प्रेरणा से संस्थापित प्रयाग महिला विद्यापीठ में रहते हुए अशिक्षित जनसमूह में शिक्षा की ज्वाला फैलायी थी।

वह लिखती हैं – 'वर्तमान युग के पुरुष ने स्त्री के वास्तविक रूप को न कभी देखा था, न वह उसकी कल्पना कर सका। उसके विचार में स्त्री के परिचय का आदि अंत इससे अधिक और क्या हो सकता था कि वह किसी की पत्नी है। कहना न होगा कि इस धारणा ने ही असंतोष को जन्म देकर पाला और पालती जा रही है।' अपने लेखों में उन्होंने सदैव नरी- हित पर जोर दिया और नारी सशक्तिकरण की मिसाल बनीं।

निधन

महादेवी वर्मा जी ने अपना पूरा जीवन इलाहाबाद में बिताया और फिर 11 सितंबर 1987 वे इस दुनिया की मोह माया को त्याग कर चल बसीं, इन्होंने अपनी कविताओं में महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार को ही नहीं बल्कि समाज के गरीब और जरूरतमंद तथा दलित लोगों के भाव को भी चित्रित किया।

इसके साथ ही महादेवी वर्मा जी के व्यक्तित्व और स्वभाव को देखकर बहुत से रचनाकार और लेखक उनसे प्रभावित हुए। हिंदी साहित्य में महादेवी जी का योगदान हमेशा यादगार रहेगा, साथ ही उनकी दूरदर्शी सोच के भी सभी कायल थे इसलिए इन्हें साहित्य सम्राज्ञी का दर्ज़ा दिया गया। मरकर भी आज वे समाज के प्रति किए गए कार्यों और अपनी जीवंत रचनाओं में अमर हैं।[10,11,12]

महादेवी "सादा जीवन, उच्च विचार" के कथन को सिद्ध करती हैं। उन्होंने जितना सादा जीवन व्यतीत किय, उनके विचार उतने ही साफ और उच्च थे। उनके द्वारा कहे गए कुछ कथन, जिनसे उनके महान विचार साफ झलकते हैं, इस प्रकार हैं –

- "जीवन के सम्बन्ध में निरन्तर जिज्ञासा मेरे स्वभाव का अंग बन गई है। "
- "आज हिन्दु – स्त्री भी शव के समान निःस्पंद है।"
- "अर्थ ही इस युग का देवता है। "
- "मैं किसी कर्मकाण्ड में विश्वास नहीं करती… मैं मुक्ति को नहीं, इस धूल को अधिक चाहती हूँ।"
- "अपने विषय में कुछ कहना पड़े : बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों को।"
- "कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो साहस के साथ उनका सम्मान करते है ।"
- "कवि कहेगा ही क्या, यदि उसकी इकाई बनकर अनेकता नहीं पा सकी और श्रोता सुनेंगे ही क्या, यदि उन सबकी विभिन्नताएँ कवि में एक नहीं हो सकी।"
- "मेरे संकल्प के विरूद्ध बोलना उसे और अधिक दृढ़ कर देना है।"
- "पति ने उनका इहलोक बिगाड़ दिया है, पर अब उसके अतिरिक्त किसी और की कामना करके वे परलोग नहीं बिगाड़ना चाहती।"
- "गृहिणी का कर्त्तव्य कम महत्वपूर्ण नहीं है, यदि स्वेच्छा से स्वीकृत है।"
- "क्या हमारा जीवन सबका संकट सहने के लिए है?"

- “प्रत्येक गृह स्वामी अपने गृह का राजा और उसकी पत्नी रानी है कोई गुप्तचर, चाहे देश के राजा का ही क्यों न हो, यदि उसके निजी वार्ता का सार्वजनिक घटना के रूप मे प्रचारित कर दे, तो उसे गुप्तचर का अधिकार दुष्टाचरण ही कहा जाएगा।”
- “विज्ञान एक क्रियात्मक प्रयोग है।”
- “वे मुस्कुराते फूल, नही जिनको आता है मुरझाना, वे तोरो के दीज नही जिनको भाता है बुझ जाना।”
- “प्रतिवाद के उपरांत तो मत परिवर्तन सहज है, पर मौन मे इसकी कोई संभावना शेष नहीं रहती।”
- “मैंने हँसी में कहा – ‘तुम स्वर्ग में कैसे रह सकोगे बाबा! वहाँ तो न कोई तुम्हारे कूट पद और उलटवासियाँ समझेगा और न आल्हा-ऊदल की कथा सुनेगा । स्वर्ग के गन्धर्व और अप्सराओ मे तुम कुछ न जँचोगे।”
- “पैताने की ओर यंत्र से रखी हुई काठ और निवाड़ से बनी खटपटी कह रही थी कि जूते के अछूतेपन और खड़ाऊँ की ग्रामीणता के बीच से मध्यमार्ग निकालने के लिए ही स्वामी ने उसे स्वीकार किया है।”
- “प्रत्येक विज्ञान मे क्रियात्मक कला का कुछ अंश अवश्य होता है ।”
- “कला का सत्य जीवन की परिधि में, सौंदर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है।”
- “व्यक्ति समय के सामने कितना विवश है समय को स्वीकृति देने के लिए भी शरीर को कितना मूल्य देना पड़ता है।”
- कोई भी कला सांसारिक और विशेषतः व्यावसायिक बुद्धि को पनपने ही नहीं दे सकती और बिना इस बुद्धि को पनपने ही नहीं दे सकती और बिना इस बुद्धि के मनुष्य अपने आपको हानि पहुँचा सकता है, दूसरो को नहीं।”
- “एक निर्दोष के प्राण बचानेवाला, असत्य उसकी अहिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ होता है।”
- “कवि अपनी श्रोता – मण्डली में किन गुणों को अनिवार्य समझता है, यह प्रश्न आज नहीं उठता पर अर्थ की किस सीमा पर वह अपने सिद्धांतों का बीज फेंककर नाच उठेगा, इसका उत्तर सब जानते हैं।”

कवियित्री महादेवी वर्मा के जीवन से जुड़े कुछ अनसुने और रोचक तथ्य यहां दिए गए हैं –

- महादेवी वर्मा की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई और साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा उन्होंने अपने घर पर पूरी की थी। 1919 में विवाहोपरान्त उन्होंने क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं।
- वह पढ़ाई में काफी निपूर्ण थी इसलिए उन्होंने 1921 में आठवीं कक्षा में प्रांत भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया था और क्या आप जानते हैं कि यहीं से उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत भी की, 7 वर्ष की अवस्था से ही उन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। 1925 में जब तक उन्होंने मैट्रिक पास की तब तक वह काफी सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी।
- “मेरे बचपन के दिन” कविता में उन्होंने लिखा है कि जब बेटियाँ बोझ मानी जाती थीं, उनका सौभाग्य था कि उनका जन्म एक खुले विचार वाले परिवार में हुआ। उनके दादाजी उन्हें विदुषी बनाना चाहते थे। उनकी माँ संस्कृत और हिन्दी की ज्ञाता थीं और धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। माँ ने ही महादेवी को कविता लिखने, और साहित्य में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया।
- महादेवी वर्मा ने 1932 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए किया और तब तक उनकी दो कविता संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुकी थीं। वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य बनीं।
- विवाह के बाद भी वे क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में रहीं।उनका जीवन तो एक सन्यासिनी का जीवन था. उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोईं और कभी शीशा नहीं देखा।
- उनका सबसे क्रांतिकारी कदम था महिला-शिक्षा को बढ़ावा देना और इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान। उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका ‘चाँद’ का कार्यभार 1932 में संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए।
- उन्होंने नए आयाम गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में स्थापित किये। इसके अलावा उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें प्रमुख हैं: मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र।
- उन्होंने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना 1955 में की थी। भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव भी उन्होंने ही रखी और 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन संपन्न हुआ।
- क्या आप जानते हैं कि महादेवी वर्मा बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया था। उनको आधुनिक मीरा’ भी कहा जाता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

- महादेवी वर्मा को 27 अप्रैल, 1982 में काव्य संकलन “यामा” के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1979 में साहित्य अकादमी फेलोशिप, 1988 में पद्म विभूषण और 1956 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

परिणाम

महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थीं, अतः उनके काव्य में आत्मा-परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। वे स्वयं लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है। इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेवी इस वेदना को उस दुःख की भी संज्ञा देती हैं, "जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है"(किंतु विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाला दुःख सामान्यतया लौकिक दुःख ही होता है, जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करुण रस का स्थायी भाव होता है। महादेवी ने इस दुःख को नहीं अपनाया है। वे कहती हैं, "मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं। एक वह, जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बाँध देता है और दूसरा वह, जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है" किंतु, उनके काव्य में पहले प्रकार का नहीं, दूसरे प्रकार का 'क्रंदन' ही अभिव्यक्त हुआ है। यह वेदना सामान्य लोक हृदय की वस्तु नहीं है। संभवतः इसीलिए रामचंद्र शुक्ल ने उसकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है, "इस वेदना को लेकर उन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखीं, जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना, यह नहीं कहा जा सकता"। इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सूक्ष्म और विवृत्त भावानुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है। डॉ॰ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी तो उनके काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य-पीड़ा से भी बढ़कर मानते हैं।

वर्ण्य विषय

समस्त मानव जीवन को वे निराशा और व्यथा से परिपूर्ण रूप में देखती थीं। वे अपने को नीर भरी बदली के समान बतलाती -
मैं नीर भरी दुख की बदली।
विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही- उमड़ी थी कल मिट आज चली।

महादेवी जी के प्रेम वर्णन में ईश्वरीय विरह की प्रधानता है। उन्होंने आत्मा की चिरंतन विकलता और ब्रह्म से मिलने की आतुरता के बड़े सुंदर चित्र संजोए हैं-
मैं कण-कण में डाल रही अलि आँसू के मिल प्यार किसी का।
मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का।

'अग्निरेखा` में दीपक को प्रतीक मानकर अनेक रचनाएँ लिखी गयी हैं। साथ ही अनेक विषयों पर भी कविताएँ हैं। महादेवी वर्मा का विचार है कि अंधकार से सूर्य नहीं दीपक जूझता है-

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

रात के इस सघन अंधेरे में जूझता सूर्य नहीं, जूझता रहा दीपक!
कौन सी रश्मि कब हुई कम्पित, कौन आँधी वहाँ पहुँच पायी?
कौन ठहरा सका उसे पल भर, कौन सी फूँक कब बुझा पायी।।

अग्निरेखा के पूर्व भी महादेवी जी ने दीपक को प्रतीक मानकर अनेक गीत लिखे हैं- किन उपकरणों का दीपक, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, सब बुझे दीपक जला दूँ, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, पुजारी दीप कहाँ सोता है, दीपक अब जाती रे, दीप मेरे जल अकम्पित घुल अचंचल, पूछता क्यों शेष कितनी रात आदि।

महादेवी छायावाद के कवियों में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट और निराला स्थान रखती हैं। इस विशिष्टता के दो कारण हैं - एक तो उनका कोमल ह्रदया नारी होना और दूसरा अंग्रेज़ी और बंगला के रोमांटिक और रहस्यवादी काव्य से प्रभावित होना। इन दोनों कारणों से एक ओर तो उन्हें अपने आध्यात्मिक प्रियतम को पुरुष मानकर स्वाभाविक रूप में अपना स्त्री - जनोचित प्रणयानुभूतियों को निवेदित करने की सुविधा मिली, दूसरी ओर प्राचीन भारतीय साहित्य और दर्शन तथा संत युग के रहस्यवादी काव्य के अध्ययन और अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन छायावादी कवियों के काव्य से निकट का परिचय होने के फलस्वरुप उनकी काव्याभिव्यंजना और बौद्धिक चेतना शत-प्रतिशत भारतीय परंपरा के अनुरूप बनी रही। इस तरह उनके काव्य में जहाँ कृष्ण भक्ति काव्य की विरह-भावना गोपियों के माध्यम से नहीं, सीधे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित हुई हैं, वहीं सूफी पुरुष कवियों की भाँति उन्हें परमात्मा को नारी के प्रतीक में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

प्रकृति चित्रण

प्रकृति चित्रण - अन्य रहस्यवादी और छायावादी कवियों के समान महादेवी जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें प्रकृति में अपने प्रिय का आभास मिलता है और उससे उनके भावों को चेतना प्राप्त होती है।

वे अपने प्रिय को रिझाने के लिए प्रकृति के उपकरणों से अपना श्रृंगार करती हैं-
शशि के दर्पण में देख-देख, मैंने सुलझाए तिमिर केश।
गूँथे चुन तारक पारिजात, अवगुंठन कर किरणें अशेष।

छायावाद और प्रकृति का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। महादेवी जी के अनुसार- 'छायावाद की प्रकृति, घट-कूप आदि से भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों से प्रकट एक महाप्राण बन गई। स्वयं चित्रकार होने के कारण उन्होंने प्रकृति के अनेक भव्य तथा आकर्षक चित्र साकार किए हैं। महादेवी जी की कविता के दो कोण हैं- एक तो उन्होंने चेतनामयी प्रकृति का स्वतंत्र विश्लेषण किया है-'
'कनक से दिन मोती सी रात, सुनहली सांझ गुलाबी प्रात
मिटाता रंगता बारंबार कौन जग का वह चित्राधार?'

अथवा 'तारकमय नव बेणी बंधन शीश फूल पर शशि की नूतन
रश्मि वलय सित अवगुंठन धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ वसंत रजनी।'

दूसरा प्रकृति को भाव-जगत का अंग मानकर उन्होंने मुख्यतः रहस्य साधना का चित्रण किया है।

कवयित्री को अनंत के दर्शन के लिए क्षितिज के दूसरे छोर को देखने की जिज्ञासा है-
'तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है?
जा रहे जिस पथ से युगलकल्प छोर क्या है?'

उन्होंने समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। 'सांध्यगीत' में वे अपने जीवन की तुलना सांध्य-गगन से करती हैं-
'प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन यह क्षितिज बना धुँधला विराग
नव अरुण अरुण मेरा सुहाग छाया-सी काया वीतराग'

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 4, Issue 1, January 2021 |

कल्पना, भावना और पीड़ा

महादेवी जी की सृजन-प्रक्रिया विशुद्ध भावात्मक रही है। उनकी धारणाओं को युग के विभिन्न वाद परिवर्तित नहीं कर सके हैं। उन्होंने किसी एक दर्शन को केंद्र नहीं बनाया। जिसे जीवन अथवा समाज के लिए उपयुक्त समझा उसे आत्मसात कर लिया। महादेवी जी विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की पोषक होने के कारण उनकी समस्त काव्य कृतियों में उसका प्रभाव परिलक्षित होता है। वे छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती है और प्रकृति को उसका साधन मानती हैं- 'छायावाद ने मनुष्य हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीनकाल से बिंब प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था, जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुःख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।' उन्होंने छायावाद का विवेचन करते हुए प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध का प्रतिपादन विशेष रूप से किया है। इसके साथ ही उन्होंने सूक्ष्म या अंतर की सौंदर्य वृत्ति के उद्घाटन पर बल दिया है।

महादेवी की कविता अनुभूति से परिपूर्ण है, पंत और निराला की कवितायें दार्शनिकता के बोझ से दब-सी गई हैं, किंतु महादेवी जी के काव्य में ऐसी बात नहीं। उसमें दार्शनिकता होते हुए भी सरसता है। वह सर्वत्र भावना प्रधान है। महादेवी जी के काव्य में संगीतात्मकता का विशेष गुण है। वे गीत लेखिका हैं। गीतों की लय छंदों पर उनका अद्भुत अधिकार हर जगह दिखाई देता है। वे महादेवी माधुर्य भाव की उपासिका हैं। ब्रह्म को उन्होंने प्रियतम के रूप में देखा है। अपने प्रेमपात्र के लिए उन्होंने 'प्रिय' संबोधन दिया है। उनके गीत उज्ज्वल प्रेम के गीत हैं। इसके द्वारा अपने अंतर की जिस सात्विकता का उन्होंने परिचय दिया है वह उनकी काव्य-गरिमा का आधार स्तंभ है। जब जीवन में दिव्य प्रेम के मधु संगीत के रागिनी झंकृत हुई तब कवयित्री के मन में उसने असंख्य नए स्वप्नों को जन्म दिया-
'इन ललचाई आँखों पर पहरा था जब व्रीड़ा का
साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन ने पीड़ा का।'

चिर तृषित आत्मा युग-युग से सर्वविश्वव्यापी परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल रही है। महादेवी जी की वेदनानुभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ' कहकर वे इसी विरह को जीवन की साधना मानती है। उन्होंने पीड़ा की महत्ता ही घोषित नहीं की उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। उनके सुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हैं। जब दुःख अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है तब वही दुःख सुख का रूप धारण कर लेता है।
'चिर ध्येय यही जलने का ठंडी विभूति हो जाना
है पीड़ा की सीमा यह दुख का चिर सुख हो जाना'

छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके हृदय का भावकेन्द्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ, छूट छूटकर झलक मारती रहती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वे रहना चाहती हैं। उसके आगे मिलनसुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं। वे कहती हैं कि – मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ। इस वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी हैं जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं आर कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता।
एक पक्ष मो अनंत सुषमा, दूसरे पक्ष में अपार वेदना, विश्व के छोर हैं जिनके बीच उसकी अभिव्यक्ति होती है—
यह दोनों दो ओरें थीं संसृति की चित्रपटी की
उस बिन मेरा दुख सूना मुझ बिन वह सुषमा फीकी।
पीड़ा का चसका इतना है कि —
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुममें ढूँढूगी पीड़ा।[13,14,15]

वे दुःख को जीवन की स्फूर्ति तथा प्रेरणा तत्व मानती हैं। उनकी दृष्टि में वेदना का महत्व तीन कारणों से है- वह अंतःकरण को शुद्ध करती है। प्रिय को अधिक निकट लाती है और प्रियतम की शोभा भी उसी पर आधारित है। अतः उनके काव्य में दुःख के तीन रूप मिलते हैं निर्माणात्मक, करुणात्मक और साधनात्मक। वे बौद्धों के नैराश्यवाद को स्वीकार नहीं करतीं। उन्होंने दुःख को मधुर भाव के रूप में स्वीकार किया है जिसमें वह अलौकिक प्रिय के लिए दीप बनकर जलना चाहती है-
'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल, प्रियतम का पथ आलोकित कर।'

उनके अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है जो समस्त विश्व को एक-सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख यष्टिपरक न होकर समष्टिपरक रहा है। उन्होंने कहा है व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है।उनका संदेश है-
'मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो,
मेरे गीले पलक छुओ मत मुर्झाई कलियाँ देखो।'
महादेवी का रहस्यवाद

छायावादी काव्य में एक आध्यात्मिक आवरण तथा छाया रही है। अतः रहस्यवाद छायावादी कविता के प्रवृत्ति विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया। महादेवी जी के अनुसार 'रहस्य का अर्थ वहाँ से होता है जहाँ धर्म की इति है। रहस्य का उपासक हृदय में सामंजस्यमूलक परमतत्व की अनुभूति करता है और वह अनुभूति परदे के भीतर रखते हुए दीपक के समान अपने प्रशांत आभास से उसके व्यवहार को स्निग्धता देती हैं।' महादेवी जी की रुचि सांसारिक भोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर अधिक दर्शित होती हैं। रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ उनके काव्य में लक्षित होती हैं। जिज्ञासा, आस्था, अद्वैतभावना, प्रणयानुभूति विरहानुभूति।

महादेवी जी में उस परमत्व को देखने की, जानने की निरंतर जिज्ञासा रही हैं। वह कौतूहल से पूछती हैं-
'कौन तुम मेरे हृदय में
कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित?'

उनकी अज्ञात प्रियतम के प्रति आस्था केवल बौद्धिक न होकर रागात्मक है-
'मूक प्रणय से सधुर व्यथा से स्वप्नलोक के से आह्वान
वे आए चुपचाप सुनाने तब मधुमय मुरली की तान।'

आत्मा और परमात्मा के अद्वैतत्व के लिए 'बीन और रागिनी' का प्रतीक उनकी अभिनव कल्पना एक सुंदर उदाहरण है। उनकी यह भावना कोरे दार्शनिक ज्ञान या तत्व चिंतन पर आधारित नहीं है अपितु उसमें हृदय का भावात्मक योग भी लक्षित होता है-

'मैं तुमसे हूँ एक-एक है जैसे रश्मि प्रकाश
मैं तुमसे हूँ भिन्न-भिन्न ज्यों घन से तड़ित विलास।'

भाषा-शैली

महादेवी जी का कुछ प्रारंभिक कविताएँ ब्रजभाषा में हैं, किंतु बाद का संपूर्ण रचनाएँ खड़ी बोली में हुई हैं।

महादेवी जी की खड़ी बोली संस्कृत-मिश्रित है। वह मधुर कोमल और प्रवाह पूर्ण हैं। उसमें कहीं भी नीरसता और कर्कशता नहीं। वैसे महादेवी जी की भाषा सरल है, किंतु सूक्ष्म भावनाओं के चित्रण में वह संकेतात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्ट भी हो गई हैं।

शब्द चयन अत्यंत सुंदर है, किंतु भाषा में कोमलता और मधुरता लाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों का अंग-भंग अवश्य मिलता है। जैसे- आधार का अधार, अभिलाषाओं का अभिलाषें आदि।

महादेवी जी की शैली में निरंतर विकास होता रहा है। 'नीहार' में उनकी शैली प्रारंभिक अवस्था में है। इस प्रारंभिक अवस्था की शैली में भाव कम हैं, शब्द अधिक। 'नीरजा' की शैली में भाव और भाषा की समानता है। 'दीपशिखा' की रचना में उनकी शैली प्रौढ़ हो गई है और थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की क्षमता आ गई है।

भावों को मूर्त रूप देने में महादेवी जी अत्यंत कुशल थीं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों और संकेतों का आश्रय अधिक लिया है। अतः उनकी शैली कहीं-कहीं कुछ जटिल और दुरूह हो गई है और पाठक को कविता का अर्थ समझने में कुछ परिश्रम करना पड़ता है।

रस, छंद, अलंकार, शिल्प और प्रतीक

महादेवी की कविता वियोग-श्रृंगार प्रधान है। वियोग के जैसे रहस्यमय चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, वैसे अत्यंत दुर्लभ हैं। करुण रस की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। उनके काव्य में सभी छंद मात्रिक हैं। और वे अपने आप में पूर्ण हैं। उनमें संगीत और लय का विशेष रूप से समावेश है। अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक है और अलंकारों का प्रयोग भावों को तीव्रता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है।(समानोक्ति, उपमा, रूपक, अलंकारों की अधिकता है। शब्दालंकारों की और महादेवी जी की विशेष रुचि नहीं प्रतीत होती फिर भी क्यों कि उनके गीत उनकी अव्यहत साहित्य-साधना के परिणाम हैं अतः कलागीतों के सभी शैल्पिक गुणों से युक्त हैं। उनके काव्य में छायावादी कविता के शिल्प विधान का सफल रूप द्रष्टव्य है। गीतिकाव्य के तत्व अनुभूति प्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, संक्षिप्तता, भावान्वित, गेयता आदि उनके काव्य में पूर्णतः दर्शित होते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है, 'सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने-चुने शब्दों में वर्णन करना ही गीत है।' अभिव्यक्ति की कलात्मकता, लाक्षणिकता, स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म उपमानों का ग्रहण, कोमलकांत पदावली, कल्पना का वैभव, चित्रात्मकता, प्रतीक विधान, बिंब योजना आदि कलातत्वों का उनकी कविता में पूर्ण अभिनिवेश है।

निष्कर्ष

उनकी शिल्प प्रतिभा अनुपम है। उनके अंतस का कलाकार कला के प्रति सर्वदा सचेष्ट रहा है। उदारण के लिए
'निशा को धो देता राकेश चाँदनी में जब अलकें खोल
कली से कहता यों मधुमास बता दो मधुमदिरा का मोल।'
बिंबात्मकता-
'मोती-सी रात कनक से दिन
गुलाबी प्रात सुनहली साँझ।'[16,17,18]
'दीप' महादेवी के काव्य का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसके अतिरिक्त बीन और रागिनी, दर्पण और छाया, धन और दामिनी, रश्मि और प्रकाश उनके काव्य में बार-बार आए हैं। डॉ॰ नगेंद्र के शब्दों में "महादेवी के काव्य में हमें छायावाद का अभिमिश्रित रूप मिलता है। तितली के पंखों, फूलों की पंखुरियों से चुराई हुई कला और इन सबसे ऊपर स्वप्न-सा बुना हुआ एक वायवीय वातावरण- ये सभी तत्व जिसमें घुले-मिले रहते हैं वह है महादेवी की कविता।[19,20]

संदर्भ

1. वर्मा 1985 , पृ. 38-40.
2. ^ रानू, अंजलि। "महादेवी वर्मा: आधुनिक मीरा" । साहित्यिक भारत. मूल से 21 मार्च 2007 को संग्रहीत । 5 दिसंबर 2020 को लिया गया .21 सितंबर 2007 को वेबैक मशीन पर 21 मार्च 2007 को संग्रहीत मूल से संग्रहीत
3. ^ मिश्रा, सत्य प्रकाश। "महादेवी की संस्था: प्रतिरोध और करुणा" (हिन्दी में)। तद्भव.कॉम. 22 सितंबर 2007 को मूल से संग्रहीत । 7 दिसंबर 2020 को लिया गया ।22 सितंबर 2007 को वेबैक मशीन पर 22 सितंबर 2007 को संग्रहीत मूल से संग्रहीत
4. ^ ए बी वर्मा, महादेवी। दीपशिखा (हिन्दी में)। वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन. आईएसबीएन 978-81-8031-119-2.
5. ^ वर्मा, महादेवी; पांडेय, गंगाप्रसाद (2012)। महादेवी के श्रेष्ठ गीत (हिन्दी में) (दूसरा संस्करण)। किताबघरा. आईएसबीएन 9788170161868.
6. ^ ए बी सी झा, फ़िज़ा (11 सितंबर 2019)। "कवि महादेवी वर्मा और उनकी अनदेखी नारीवादी विरासत" । छाप ।
7. ^ तेवतिया, बिमलेश। "साहित्य विचार - गद्यकार महादेवी वर्मा" । ताप्तीलोक प्रकाशन. 17 मई 2006 को मूल से संग्रहीत । 7 दिसंबर 2020 को लिया गया ।17 मई 2006 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत मूल से 17 मई 2006 को संग्रहीत
8. ^ वशिष्ठ, आरके (2002)। उत्तर प्रदेश (मासिक पत्रिका) अंक 7. लखनऊ, भारत: सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश पृष्ठ 24.
9. ^ तनेजा, ऋचा (27 अप्रैल 2018)। "महादेवी वर्मा आज की Google डूडल हैं: प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री के बारे में सब कुछ जानें" । एनडीटीवी.कॉम ।
10. ^ ए बी सिंह 2007 , पृ. 39-40.
11. ^ महादेवी वर्मा । कंब्रिया प्रेस. आईएसबीएन 978-1-62196-880-1.
12. ^ शोमर, कैरिन (1983)। महादेवी वर्मा और आधुनिक हिंदी कविता का छायावाद युग । आईएसबीएन 978-0-520-04255-1.

13. ^ किकुसी, टोमोको (2009)। महादेवी वर्मा की विश्वदृष्टि (हिन्दी में)। किताबघर प्रकाशन. आईएसबीएन 978-81-88121-95-3.
14. ^ अनंतराम, अनीता (30 जनवरी 2012)। निकाय जो याद रखें: दक्षिण एशियाई कविता में महिलाओं का स्वदेशी ज्ञान और विश्वव्यापीवाद । सिरैक्यूज़ यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978-0-8156-5059-1.
15. ^ मेनन, विशालाक्षी (2003)। भारतीय महिला और राष्ट्रवाद, यूपी की कहानी । हर-आनंद प्रकाशन। आईएसबीएन 978-81-241-0939-7.
16. ^ शोमर, कैरिन (1983)। महादेवी वर्मा और आधुनिक हिंदी कविता का छायावाद युग । बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस। आईएसबीएन 9780520042551.
17. ^ "जो रेखाएं कहती हैं न प्यारी- महादेवी वर्मा" । www.avivyakti-hindi.org (हिन्दी में)। अभिव्यक्ति . 7 दिसंबर 2020 को लिया गया .
18. ^ पांडेया 2020 , पृ. 10.
19. ^ अनंतराम 2010 , पृ. 4-8.
20. ^ वर्मा, महादेवी (1973)। स्मृति चित्र (हिन्दी में)। राजकमल प्रकाशन । 7 दिसंबर 2020 को लिया गया ।